श्लोकसंख्या-22 21-7-2020 Page 6

"वासांसि जीर्णानि यथा विहाय नवानि गृह्णाति नरोऽपराणि।
तथा शरीराणि विहाय जीर्णान्यन्यानि संयाति नवानि देही ॥"

हिन्दीअनुवाद -

जिसप्रकार मानव पुराने ~~पुराने~~ परिधानों (वस्त्रों) को त्यागकर नूतन दूसरे वस्त्रों को ग्रहण (धारण) करता है, उसीप्रकार आत्मा पुरातन शरीरों को त्यागकर दूसरे नवीन देहों को प्राप्त करता है।

(शाङ्करभाष्य का आश्रय)

भावार्थ- प्रस्तुत श्लोक में भगवान् श्रीकृष्ण आत्मा के अविनाशी होने के भाव को एक उदाहरण द्वारा प्रतिपादित करते हैं। जिसप्रकार परिधान (वस्त्र) में परिवर्तन (बदलाव) करने के बाद मानव में कोई अन्तर नहीं आता, उसीप्रकार ~~श~~ शरीर ~~का~~ ~~एक~~ से दूसरे शरीर में जाने पर आत्मा में कोई विकार नहीं आता। आत्मा निर्विकार के रूप में रहती है।

अतएव इस युद्ध में भीष्मादि के मारेजाने पर उनकी आत्मा सुरक्षित रहेगी। केवल शरीर का ही नाश होगा। अतएव आत्मा को अविनाशी (अमर्त्य) जानकर तुम्हें (अर्जुन को) युद्ध में संलग्न होना चाहिए।

जिसप्रकार मानव पुरातन परिधानों को छोड़कर नूतन वस्त्रों को ग्रहणकरता है, उसीप्रकार युद्ध में मृत जीवों को अधिक कल्याणमय देह की प्राप्ति होती है।